

RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

वर्ष - 12, अंक - 6

जनवरी-फरवरी 2024



Bharatiya Jyotisham
पयोति भावयन् लोकम्

भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

❧ विषय - सूची ❧

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	ज्योतिषशास्त्र के अनुसार नक्षत्रसाधन विमर्श	डॉ. अशोक थपलियाल	04
2.	स्थानबल साधन	डॉ. अनिल कुमार	16
3.	कालापानी : भारत - नेपाल सीमा विवाद	आलोक कुमार सौरभ सिंह डॉ. सत्यपाल सिंह	23
4.	ऑनलाइन शिक्षण द्वारा प्रदान शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. मोहन लाल 'आर्य'	28
5.	भारतीय चिन्तन परम्परा तथा काव्यशास्त्रों में अभिधा	डॉ. कृष्ण चन्द्र पण्डा	32
6.	शिक्षक-शिक्षा में सीखने की शैलियों का महत्त्व	डॉ. राजकुमारी गोला	36
7.	माध्यमिक स्तर पर कार्यरत् प्रधानाध्यापकों की प्रशासनिक प्रभावशीलता का अध्ययन	गौरव कुमार डॉ. मोहन लाल 'आर्य'	41
8.	मिडिल स्टेज पर अध्ययनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन	उमरा इदरीस डॉ. राजकुमारी गोला	45
9.	क्या भारतीय बाजार में पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए केंद्रीकृत सार्वजनिक खरीद प्रणाली समय की आवश्यकता है?	डॉ. नमिता जैन	49
10.	मनोविज्ञान का संज्ञानात्मक स्वरूप और अधिगम	डॉ. कालिका प्रसाद शुक्ल	54
11.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और उच्चशिक्षा का पुनर्गठन	डॉ. अनूप कुमार पाण्डेय	58
12.	समय की सार्थकता एक विवेचन	डॉ. अर्चना कुमारी	63
13.	वैदिकसाहित्य में पंचमहाभूतों का अभिचिन्तन	डॉ. मोहिनी अरोरा	65

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत प्रधानाध्यापकों की प्रशासनिक प्रभावशीलता का अध्ययन

गौरव कुमार

शोधकर्ता, शिक्षा विभाग

आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उ.प्र.)

डॉ. मोहन लाल 'आर्य'

प्रोफेसर, शिक्षा विभाग

आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उ.प्र.)

सार:

शिक्षा व्यवस्था पर बढ़ते दबाव के कारण स्कूल के मुखिया प्रधानाचार्य पर दबाव कई गुना बढ़ गया है। प्रधानाचार्य की भूमिका अब स्कूल के प्रशासन तक ही सीमित नहीं है। उनकी भूमिका एक अनुदेशक, निर्देशक, मार्गदर्शक आदि की हो गई है जो आवश्यकता पड़ने पर शिक्षकों को सहायता प्रदान कर सकता है। प्रधानाचार्य को अब छात्रों सहित सभी के सुधारित प्रदर्शन के लिए प्रशासनिक रूप से प्रभावी होने की आवश्यकता है।

बीजक शब्द: प्रधानाचार्य, प्रशासनिक प्रभावशीलता, सामाजिक मानदंड, विद्यालय, नीति।

प्रस्तावना:

कई विद्वानों के अनुसार प्रशासन को संगठनात्मक लक्ष्यों को कुशलतापूर्वक पूरा करने के लिए दूसरों के साथ और उनके माध्यम से काम करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें एक स्कूल संगठन के संचालन में सामाजिक व्यवस्था के व्यवहार को प्राथमिकता मिलती है (त्यागी, 2009)। सप्रे (2001) ने प्रशासन को आम तौर पर इनपुट उन्मुख के रूप में परिभाषित किया जो प्रगति का एक प्रमुख संकेतक है। अध्ययनों से पता चला है कि प्रशासन में नेतृत्व, संगठन, संचार और समन्वय आदि प्रक्रियाओं के साथ-साथ बजट, स्टाफिंग, मूल्यांकन जैसे सुविचारित सिद्धांतों और प्रथाओं के उपयोग के साथ मामलों के प्रबंधन जैसे कार्य शामिल हैं। शिक्षा प्रशासक स्कूल के मानक निर्धारित करते हैं और उन्हें प्राप्त करने के लिए आवश्यक नीतियां और प्रक्रियाएं स्थापित करें। वे प्रबंधकों, सहायक कर्मचारियों, शिक्षकों, परामर्शदाताओं, पुस्तकालयाध्यक्षों, प्रशिक्षकों और अन्य कर्मचारियों की निगरानी भी करते हैं। उनके कार्यों में शैक्षणिक कार्यक्रम विकसित करना, छात्रों की स्कूल प्रगति की निगरानी करना, शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों को प्रशिक्षण देना और प्रेरित करना, कैरियर परामर्श और अन्य छात्र सेवाओं का प्रबंधन करना, रिकॉर्ड रखना, बजट तैयार करना और अन्य सामान्य कर्तव्य निभाना शामिल है।

एनपीई ने 1986 में शिक्षा और प्रशासन की गुणवत्ता को चिह्नित किया था शिक्षा को अत्यंत बौद्धिक कठोरता, उद्देश्य की गंभीरता और साथ ही नवाचार और रचनात्मकता के लिए आवश्यक स्वतंत्रता के माहौल में प्रबंधित करने की आवश्यकता है। सिस्टम में अनुशासन लाने की प्रक्रिया यहीं और अभी शुरू करनी होगी।

शिक्षा में उपरोक्त के निहितार्थ को आज भारत में ठीक से लागू नहीं किया जा रहा है। इसके प्रशासन को सुव्यवस्थित करने की जरूरत है। यह सत्य हो सकता है कि शैक्षिक प्रशासक की स्थिति में उतना बदलाव नहीं आया है जितना वांछनीय था। लेकिन शिक्षा की इस दुर्दशा के लिए केवल प्रशासन को ही जिम्मेदार नहीं माना जा सकता। वर्तमान शिक्षा प्रणाली की अपर्याप्तता और कमजोरी के पीछे कई अन्य कारक और स्थितियाँ भी हो सकती हैं। शिक्षा की प्रक्रिया में, कई चर शामिल होते हैं जो आंशिक रूप से नहीं तो पूरी तरह से शिक्षा की गुणवत्ता निर्धारित करते हैं। हालाँकि शिक्षा के मामलों का प्रबंधन करने वाले प्रशासकों से युक्त मानवीय कारक सबसे बहुमुखी है। यह शैक्षणिक संस्थान में संचालित होने वाले अन्य सभी कारकों और स्थितियों में कटौती करता है। सामग्री में संस्थागत उपकरण, शिक्षण की पद्धति, शिक्षण और अन्य शैक्षणिक गतिविधियों का संगठन, संस्थान का माहौल, छात्र अनुशासन और शिक्षा प्रक्रिया में अन्य भागीदारी, छात्र के साथ शिक्षक की पहचान और शिक्षण, सीखने में उनकी सक्रिय भागीदारी शामिल है। प्रक्रिया में ऐसे कई कारक और स्थितियाँ हैं जिन्हें शिक्षा की उच्च गुणवत्ता के महत्वपूर्ण निर्धारक के रूप में वर्णित किया गया है। लेकिन ये सभी कारक और स्थितियाँ वास्तव में चरम पर हैं, प्रशासक द्वारा हेरफेर किया गया है। इन सभी कारकों का प्रभावी और वांछनीय संचालन प्रशासक की अंतर्दृष्टि, क्षमता और कौशल पर निर्भर करता है। शिक्षा के क्षेत्र में उनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। इस प्रकार, शैक्षिक प्रणाली की पर्याप्तता के रूप में प्रभावशीलता को केवल प्रशासनिक प्रभावशीलता का एक पहलू, एक कार्य माना जा सकता है। इस स्तर पर शिक्षा प्रशासन की प्रकृति की विस्तृत चर्चा वांछनीय प्रतीत होती है।

प्रशासनिक प्रभावशीलता को समझना:

प्रशासनिक प्रभावशीलता की अवधारणा को इसकी जटिल प्रकृति (बाओ 2009) के कारण विभिन्न लेखकों द्वारा अलग-अलग तरीके से परिभाषित किया गया है। कुछ शोधकर्ताओं ने इसे निर्धारित लक्ष्य को पूरा करने के इरादे से प्रशासनिक प्रयासों और कार्यों के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया के रूप में परिभाषित किया है (अकोमोलाफे 2012, एडेमिलुआ 2012)। प्रशासनिक प्रभावशीलता को जटिल नेस्टेड संबंधों और एक इंटरैक्शन पैटर्न (कैमॉक एट अल 1995) की श्रृंखला के उत्पाद के रूप में भी परिभाषित किया गया है। इस शब्द को सरल भाषा में किसी व्यक्ति के पास किसी संगठन को आसान और प्रभावी तरीके से चलाने के लिए मौजूद प्रशासनिक कौशल के रूप में समझाया जा सकता है। प्रभावी शब्द को विभिन्न आयामों में देखा जा सकता है। आर्थिक आयाम, राजनीतिक आयाम, सामाजिक आयाम और भी बहुत कुछ। बख्श एट अलण् (2013) सार्वजनिक क्षेत्र के विश्वविद्यालयों में विभाग प्रमुखों की प्रभावशीलता को प्रभावित करने वाले कुछ कारकों पर केंद्रित है। शोधकर्ता ने निर्धारकों को मापने के लिए एक प्रश्नावली विकसित की और प्रभावशीलता को लीडरशिप प्रैक्टिसेज इन्वेंटरी एलपीआई द्वारा मापा गया। अध्ययन में यादृच्छिक रूप से चयनित इक्कीस विश्वविद्यालयों के पांच सौ शिक्षकों के एक नमूने ने भाग लिया। एकत्रित आंकड़ों का प्रतिगमन विश्लेषण यह उत्तर देने के लिए किया गया था कि श्रयनित कारक विभागाध्यक्षों (एचओडी) की प्रशासनिक प्रभावशीलता को कितनी अच्छी तरह प्रभावित करते हैं। यह पाया गया कि सभी चयनित कारक प्रशासनिक प्रभावशीलता के साथ सकारात्मक रूप से सहसंबद्ध थे। व्यक्तित्व लक्षण महत्वपूर्ण भविष्य कहनेवाला शक्तियों के साथ संगठनात्मक माहौल के बाद सबसे मजबूत निर्धारक साबित हुए।

एकुंदायो एट अलण् (2013) ने नाइजीरियाई माध्यमिक विद्यालयों में प्रधानाध्यापकों के समय प्रबंधन कौशल और प्रशासनिक प्रभावशीलता की जांच की। अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण डिजाइन का उपयोग किया गया। जनसंख्या में ओन्डोए एकटी और ओसुन राज्यों के माध्यमिक विद्यालयों के सभी प्रधानाध्यापक और शिक्षक शामिल थे। न्यादर्भ में तीन राज्यों से यादृच्छिक रूप से चुने गए 200 प्रिंसिपल और 600 शिक्षक शामिल थे। एकत्र किए गए डेटा का विश्लेषण आवृत्ति गणना, सरल प्रतिशत, माध्य और मानक विचलन का उपयोग करके किया गया था। अध्ययन से पता चला कि प्रधानाध्यापकों के समय प्रबंधन कौशल के साथ-साथ प्रशासनिक प्रभावशीलता का स्तर भी उत्साह वर्धक था। हालाँकि अध्ययन से उन कारकों का पता चला जो प्राचार्यों के समय प्रबंधन कौशल में बाधाएँ पैदा करते हैं। इनमें स्कूल में आपातकालीन मामलों पर प्रतिक्रिया देने की आवश्यकता, शिक्षा मंत्रालय से तत्काल कॉल का जवाब देने की आवश्यकता आदि शामिल हैं।

अध्ययन से उन रणनीतियों का भी पता चला जिन्हें प्रधानाध्यापकों के बीच बेहतर समय प्रबंधन के लिए अपनाया जा सकता है। इनमें प्रिंसिपलों को अपने सबसे अधिक उपभोग वाले कार्यों की पहचान करने और यह निर्धारित करने की आवश्यकता शामिल थी कि क्या उन्होंने अपना समय सबसे महत्वपूर्ण गतिविधियों में निवेश किया है या नहीं, और दूसरों के बीच उनकी नियुक्ति और कार्यों का आसानी से सुलभ रिकॉर्ड रखना शामिल है। निष्कर्षों के आधार पर यह सिफारिश की गई कि प्राचार्यों के समय प्रबंधन कौशल के साथ-साथ उनकी प्रशासनिक प्रभावशीलता की गति को बनाए रखा जाना चाहिए जबकि प्रयासों को उन कारकों से बचने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए जो उनके समय प्रबंधन कौशल में बाधाएं पैदा करते हैं।

माध्यमिक स्तर पर प्रधानाचार्यों की भूमिका:

प्रधानाचार्य, प्रशासकों के पदानुक्रम में सबसे शीर्ष सदस्य होने के नाते, स्कूल की प्रशासनिक प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनकी भूमिका और योगदान एक प्रतिष्ठित स्थान रखता है और उनके कौशल पर स्कूल की सफलता और भविष्य निर्भर करता है। यह उसकी जिम्मेदारी है कि वह स्कूल को इस तरह से चला कि शिक्षकों, बच्चों, माता-पिता, समाज आदि सहित शिक्षा के सभी हितधारकों को पूरा किया जा सके। शोध ने सुझाव दिया है कि कर्मचारियों के विकास का सकारात्मक परिणाम सुनिश्चित करने के लिए स्कूल के माहौल में विश्वास, आपसी सम्मान और सहयोगात्मक रूप से काम करने की इच्छा होनी चाहिए (नोलन और हूर, 2004)।

इस प्रकार प्रधानाचार्य को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि स्कूल का वातावरण सभी सदस्यों के प्रति सम्मान जनक हो और इससे जुड़े सभी लोगों की सफलता के लिए स्वस्थ हो। प्रधानाचार्य को शिक्षकों के लिए अनुदेशक नेता की भूमिका निभानी चाहिए और उनके व्यावसायिक विकास के लिए प्रयास करना चाहिए। व्यावसायिक विकास, व्यापक अर्थ में, किसी व्यक्ति के उसकी व्यावसायिक भूमिका के विकास को संदर्भित करता है। यह शिक्षकों को शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता के प्रति पेशेवर रूप से अधिक उत्तरदायी होने में मदद करता है। प्रधानाचार्य को शिक्षकों के शैक्षणिक पर्यवेक्षण में भी भाग लेना चाहिए। शैक्षणिक पर्यवेक्षण एक रचनात्मक प्रक्रिया है जो व्यावसायिक विकास और शिक्षा के सुधार पर केंद्रित है। इसकी विशेषता प्रशासकों और शिक्षकों के बीच विश्वास और आपसी समझ के माहौल में एक कॉलेजियमए मददगार संबंध है। अनुदेशात्मक पर्यवेक्षण पेशेवर विकास और योग्यता का समर्थन करने का एक तरीका है और इसे कर्मचारियों के विकास के एक अभिन्न घटक के रूप में पहचाना गया है न कि एक अलग गतिविधि (नोलन और हूर, 2004)।

संक्षेप में एक निर्देशात्मक नेता के रूप में प्रधानाचार्य की

नाटकीय रूप से भिन्न भूमिका को निभाता है ब्रूअर (2001) ने एक ऐसी भूमिका के रूप में रेखांकित किया है, जिसके लिए निर्देश पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता होती है। शिक्षार्थियों का एक समुदाय बनाना, निर्णय लेना साझा करना, बुनियादी बातों को कायम रखना, समय का लाभ उठाना, सभी स्टाफ सदस्यों के लिए चल रहे व्यावसायिक विकास का समर्थन करना, बहुआयामी स्कूल योजना का समर्थन करने के लिए संसाधनों को पुनर्निर्देशित करना, और ईमानदारी, पूछताछ और निरंतर सुधार का माहौल बनाना।

माध्यमिक स्तर पर प्रधानाध्यापकों की प्रशासनिक प्रभावशीलता की आवश्यकता:

विद्यालय संगठन तभी प्रभावी ढंग से कार्य कर सकता है और समृद्ध हो सकता है जब विद्यालय का प्रमुख अर्थात् प्रधानाचार्य प्रशासनिक रूप से प्रभावी हो किसी संगठन के कुशल और समृद्ध काम काज के लिए प्रशासनिक कौशल में उनकी प्रभावशीलता आवश्यक है। प्रधानाचार्यों की प्रशासनिक प्रभावशीलता निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण है: -

बेहतर शिक्षण नेतृत्व के लिए: जो प्रधानाचार्य प्रशासनिक मामलों में कुशल है, वह उन शिक्षकों के लिए एक प्रभावी निर्देशात्मक नेता हो सकता है, जिन्हें विद्यालय के प्रमुख से निरंतर समर्थन और मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। निर्देशात्मक नेतृत्व में स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करना, निर्देश के लिए संसाधन आवंटित करना, पाठ्यक्रम का प्रबंधन करना, पाठ योजनाओं की निगरानी करना और शिक्षकों का मूल्यांकन करना शामिल है। इसे उन सभी कार्यों के रूप में परिभाषित किया गया है जो एक प्रधानाचार्य छात्र सीखने में वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए लेता है या दूसरों को सौंपता है (फ्लैथ 1989)। इस प्रकार, एक प्रशासनिक प्रभावी प्रधानाचार्य समग्र रूप से एक बेहतर अनुदेशक नेता हो सकता है।

शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए: किसी संगठन के विकास के लिए शिक्षकों का व्यावसायिक विकास महत्वपूर्ण घटक है। एक प्रभावी प्रधानाचार्य यह सुनिश्चित कर सकता है कि स्कूल की नियमित गतिविधियों के बीच संतुलन हो और माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की जरूरतों के प्रति बेहतर तरीके से प्रतिक्रिया देने के लिए उनके शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए पर्याप्त समय सुनिश्चित हो।

बेहतर शैक्षणिक पर्यवेक्षण के लिए: एक कुशल प्रमुख प्रिंसिपल गुणवत्तापूर्ण फीडबैक के साथ शिक्षकों का बेहतर शैक्षणिक पर्यवेक्षण सुनिश्चित कर सकता है ताकि वे कक्षा प्रबंधन की बेहतर रणनीतियों को सीखने में सक्षम हो सकें।

परिणामों में सुधार करने के लिए: स्कूलों का सम्मानजनक, अनुकूल वातावरण छात्रों सहित सभी हितधारकों के विकास को बढ़ावा देता है, जो प्रधानाध्यापकों के प्रभावी प्रशासनिक कौशल के प्रत्यक्ष लाभार्थी

हैं। छात्रों की सफलता के लिए प्रेरित शिक्षकों के साथ एक सुव्यवस्थित स्कूली शिक्षा दिनचर्या आवश्यक है।

हितधारकों की भागीदारी बढ़ाने के लिए: एक प्रभावी नेता यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षा के सभी हितधारकों को स्कूल संगठन के सफल संचालन के लिए सूचित और शामिल किया जाए।

निष्कर्ष:

इस प्रकार उपरोक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विद्यालय के प्रधानाचार्य को विद्यालय या स्कूल का प्रमुख होने के नाते संगठन (विद्यालय) के सफल संचालन के लिए प्रशासनिक रूप से प्रभावी होने की आवश्यकता है। यह समग्र रूप से विद्यालय के बेहतर प्रदर्शन को सुनिश्चित करता है। विद्यालय प्रधानाचार्यों को उनकी गतिविधि के क्षेत्र में अद्यतन रखने के लिए नियमित प्रशिक्षण सुनिश्चित करने के लिए स्कूल नियामक अधिकारियों द्वारा प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। विद्यालय के प्रमुख (प्रधानाचार्य) को एक निर्देशात्मक नेता में बदलने के लिए सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए प्रशिक्षण की आवश्यकता है जो जरूरत पड़ने पर स्टाफ सदस्यों को समय पर सहायता और सही मार्गदर्शन प्रदान कर सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

- कैमर्माक पी, नीलकांत वी, डाकिन एस. (1995), प्रशासनिक प्रभावशीलता का एक सामान्य मॉडल विकसित करना: एक सामाजिक निर्माणवादी परिप्रेक्ष्य, प्रशासन अध्ययन जर्नल 32(4):443-473.
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986, (1986) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ; शिक्षा विभागद्वारा नई दिल्ली, पे-20।
- त्यागी आर.एस. (2009); स्कूली शिक्षा में प्रशासन एवं प्रबंधन, भारत में स्कूली शिक्षा के प्रशासन में, संपादित: मुखोपाध्याय, एम. और त्यागी, आर.एस. नई दिल्ली, भारत: नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ स्कूल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन।
- Adeyemi TO and Ademilua SO (2012); Conflict management strategies and administrative effectiveness in Nigerian Universities. Journal of Emerging Trends in School Research and Policy Studies (JETERAPS); 3(3):368-375.
- Akomolafe CO (2012); A comparative study of principals' administrative effectiveness in public and private secondary schools in Ekiti State, Nigeria. Journal of Education and Practice; 3(13): 39-45.
- Bakhsh, Khuda, Azhar Mumtaz Saadi, and Shafqat Rassol (2014); What Matters Most? Determinants of

- Administrative Effectiveness. *American Journal of School Research*; 2(11):1088-1090.
- Bao C. (2009); Comparison of public and private sector managerial effectiveness in China: A three-parameter approach. *Journal of Management Development*; 28(6):533-41.
 - Brewer H. (2001); Ten steps to success. *Journal of Staff Development*; 22(1):30-31.
 - Ekundayo, Timilehi H, Kolawole Adenike O. (2013); Time Management Skills and Administrative Effectiveness of Principals in Nigerian Secondary Schools. Department of School Foundations and Management, Ekiti State University, Ado-Ekiti, Nigeri.
 - Flath B. (1989); The principal as instructional leader. *ATA Magazines*; 69(3):19-22, 47-49.
 - Nolan J Jr, Hoover LA. (2004); Teacher supervision and evaluation. In *Theory into Practice*, New York: John Willy and Sons/Jossey Bass.
 - Sapre P. (2001); Moral Leadership in Education: an Indian perspective. *International Journal of Leadership in Education*, 4(4).